

SAMARPAN

complete surrender



SEP 2008

SAMARPAN

complete Surrender

SEPTEMBER 2008

(A Spiritual India e-magazine)



Sai Baba website – <http://www.shirdi-sai-baba.com>

Spiritual India – <http://www.spiritualindia.org>

Sai Baba Forum – <http://forum.spiritualindia.org>

Sathya Sai Baba Forum – <http://sathyaibaba.spiritualindia.org/forum>

| | |
|--|----|
| Editor's Thoughts | 3 |
| समर्पण | 4 |
| How Each One of Us Knew Sai Baba | 9 |
| Faith | 12 |
| A Story of Goddess Vaishno Devi | 13 |
| If you sow faith, you will reap miracles | 20 |
| The Story of a Donkey | 21 |
| The Banyan Deer | 22 |
| Devotee's Experence | 24 |
| काँच की बरनी और दो कप चाय | 26 |
| साई शिवा | 27 |
| हर जगह है मेरे साई | 32 |
| कुछ शब्दों में पिरोयी माला बाबा के चरणों में | 34 |
| हमारी मांगें पूरी करो | 35 |
| मेरे मन का साई | 37 |
| About Us | 38 |

Editor's Thoughts

When people ask me what was the inspiration behind the Sai Baba Forum (<http://forum.spiritualindia.org>) and Spiritual India website (<http://www.spiritualindia.org>), I do not know how I can put into words about an inspiration which was not at intellectual level. I would say that it was divine inspiration. I did not know how far successful would my attempt to reach Shirdi Sai devotees would be, but somewhere in my heart I knew that I should make an attempt to spread SAI's words in particular and Spirituality in general. It has been an unforgettable 7 years since the journey started.

From a humble family of around 10,000 steadily our family is always felt that Baba is bringing us closer to Him. We all are blessed by advancement. It is just grace is showered to ways. The inspiration sharing of members' and how everybody prayers and wishes for problems are the pillars has been the umbrella from all sun and rain journey.

In order to improve the SAI, we have planned to in a magazine format. the monthly series and what better than Navratri.

Since this is the First edition of this Spiritual Magazine, I would request you to please provide us your comments and valuable suggestions. You can reach us at mag@spiritualindia.org.

OM SAI RAM



beginning we are now a members and slowly and only growing. I had slowly and slowly by this blessed Forum. Baba in our spiritual amazing how Baba's devotees in different provided to all by devotional experiences pitch in for sending their other member's of our forum. Sai's grace which has protected us during the course of

reach of our beloved organise some content This edition is the first in

समर्पण

सरधा के साथ पूर्ण रूप से समर्पण इस्वर की प्राप्ति कर देता है

| आओ एक भक्त की कहानी उसके मुह

से हे सुने | कुछ बात है | मैं बहुत भी काम ठीक तरह | ऐसा लगता था ने भी साथ छोड़ रात मन से प्राथना भगवान मैं बहुत हूँ पर आप मेरे शायद ऐसा लगता नहीं रहे है या सुन कर रहे है | मन और एक दिन मुझे के सिलसिले मैं मैं मन ही मन की हे भगवान इस करबा दो, मेरे साथ कौन है मेरा सहारा उठा पर मन अभी पुरानी असफलताये



समय पहले की परेशान था , कोई से नहीं हो रहा था की शायद भगवान दिया हो | मैं दिन करता था की हे कुछ नहीं माग रहा साथ तो रहो | पर था की वो सुन ही कर भी अनसुना बहुत परेशान था | एक बहुत बड़े काम बंगलोर जाना था | प्राथना करने लगा बार मेरा काम रहो प्रभु | आखिर | मैं पूजा कर के भी परेशान था | अभी भी डरा रही

थी | परेशान था की कल क्या होगा | कल ही बंगलोर जाना है | रात सोने से पहले फिर से प्राथना की हे भगवान मेरे साथ ही रहना | मैं थोडा सा खुश भी था की रास्ते मैं कोपरगाँव पर रेल रुकेगी | कोपरगाँव शिर्डी से सिर्फ १५ किलोमीटर दूर है सो मेरे लिए तो वो हे शिर्डी के सामान है | वही से बाबा को प्रणाम कर लूँगा | और हा अगर कोई फकीर मिल जाए तो उसे कुछ दक्षिणा भी दे दूँगा | शायद बाबा का अशिर्बाद मिल जाए | ऐसा ही मन मैं विचार कर के सो गया |

अगले दिन सुबह उठकर सीधा बाबा को प्रणाम किया और कहा की बाबा कोपरगाँव में आप दर्शन दे देना और मैं बहुत जल्दी ही शिर्डी आऊँगा | और फिर मैं सीधा रेल में बैठ गया | धीरे धीरे रेल चलने लगी मैं वही खिड़की पर बैठ कर बाहर देखने लगा | पर मैं मन ही मन सोच रहा था की जैसे ही कोपरगाँव आएगा मैं प्लेटफार्म पर उतर कर उसकी धूल को माथे से लगाऊँगा | मुझे सच में साईं के सहारे की बहुत जरूरत थी | रेल में अच्छी खाशी भीड़ थी | कई सारे लोग थे जो मेरे साथ ही चले थे और कुछ रास्ते में चढ़ थे | पूरे २ दिन का सफर था | मन ही मन सोचा कहीं और दिमाग लगते हैं नहीं तो उलझन में ही रहेगा मन | फिर आस पास देखना शुरू किया | एक छोटा सा परिवार दिखा जिसमें २ बच्चे थे | बहुत ही शैतान थे दोनों | अपनी माँ के बात बलकुल भी नहीं सुन रहे थे | उनके साथ ही २ कॉलेज के लड़के दिखे | और मेरे सामने दो और लोग बैठे थे उन दोनों ही की उमर कोई ५०-५५ के पास ही होगी | और मेरी सीट पर एक और आदमी था | मन फिर से मेरी परेशानियों की तरफ भागने लगा | फिर सोचा की क्यों न इन लोगो से बात करूँ जिस से मन इधर उधर न भटके | पर कैसे बात करूँ सब तो अपने अपने में मस्त थे | पर पता नहीं शायद भगवान ने सुन ली हो सो सामने बैठे हुए आदमी ने मेरे से मेरी पत्रिका मांगी | मेरे पास २-३ पत्रिका थी जो मैं रास्ते के लिए लाया था | मैं बड़ा खुश हुआ की चलो कोई तो बात करना वाला मिला | पत्रिका देने के बाद मैंने उनसे पुछा की वो कहाँ जा रहे हैं तो वो बोले की वो शिर्डी जा रहे हैं बाबा के दर्शन करने | उनका नाम हरी जी था | उन्होंने उनके साथ बैठे दूसरे आदमी का परिचय कराया | वो उनके भाई थे रमन जी | यह सब सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई की चलो बाबा का कोई भक्त मिला | सच में ऐसा लगा की खुद बाबा ने भेजा हो मेरे लिए | मैं ने भी उनको बताया की मैं भी साईं का भक्त हूँ तो वो भे बड़े खुश हुए | फिर काफी देर तक उनसे बात होती रही | उन्होंने बताया की उनका पूरा परिवार दिल्ली में है और उनके बड़े बेटे के शादी हैं सो वो बाबा को निमंत्रण देने आए हैं |

फिर धीरे धीरे उनसे जान पहचान हो गई और हम इधर-उधर की बात करने लगे | ११ बज चुके थे और एक स्टेशन आया | हम तीनों ने स्टेशन पर उतरने के लिए सोचा | जैसे ही रेल रुकी, वो दोनों पहले उतरे गए | मैं भी दरवाजे की तरफ आया और उतरने की कोशिश करने लगा | पर अचानक पता नहीं क्या हुआ की मेरा पैर फिसल गया और लड़खड़ाते हुए उनके पास जाकर गिरा और मेरा सर उनके घुटने से टकरा गया | मेरे हाथ में थोड़ी सी चोट आ गई | फिर हरी जी और रमन जी ने मिलकर उठाया और वापिस रेल में मुझे लेकर आए | मैं फिर से दुखी हो गया | वैसे ही कम परेशानी थी जो अब यह भी हो गया | पर हरी जी ने बहुत सेवा की | एक चाय वाला आया उस से चाय खरीदी और अपने हाथो से मुझे पिलाई और मेरे पेटो पर दवा भी लगाई | फिर करीब १ घंटे के बाद उन्होंने खाने का आर्डर किया और हम सबने मिलकर खाना खाया | हरी जी ने जो मदद की उससे बहुत तसल्ली मिली पर मन कुछ ज्यादा

ही दुखी था | लगने लगा अगर बाबा होते तो यह चोट ही न लगती | शायद बाबा साथ नहीं है | फिर धीरे धीरे नींद आने लगी | गाड़ी फिर से किसी स्टेशन पर रुकी | हरी जी ने फिर से स्टेशन पर उतरने की इच्छा जताई | मेरे पैर में बहुत दर्द था इसलिए मैंने मन कर दिया पर हरीजी कुछ खरीदना चाहते थे पर शायद उनके पास खुले पैसे नहीं थे इसलिए मैंने उनको १० रुपये दे दिए | फिर थोड़ी देर बाद सब लोग वापस आ गए | अब १ बज चुका था | खाने के बाद सबको नींद आने लगी थी | कोपरगाँव आने में अभी भी २ घंटे थे | और फिर हरीजी को भी वही उतरना था | फिर सब धीरे धीरे सोने लगे | मुझे भी बहुत नींद आने लगी |

मैंने गौर से देखा धीरे-धीरे सोने के बाद कोपरगाँव था सो मैं भी की कोशिश करने आंखे बंद किए प्रयास करने लगे बंद कर ली और मन ही मन बात शायद मैं नाराज़ वो मेरे साथ नहीं ठीक नहीं हो रहा यह चोट भी लग धीरे नींद आ गहरी नींद में सो अचानक ही मेरी



की सब लोग लगे थे | २ घंटे के लिए उठना एक नींद लेने लगा | हरीजी भी हुए सोने का थे | मैंने आँखे फिर से साई से करने लगा | अब था बाबा से की है | कुछ भी था और फिर गयी | पर धीरे गयी और मैं गया | फिर आँख खुल गयी

| लगता था कोई स्टेशन आया है | इधर उधर देखा तो कोई भी नहीं दिखा, हरीजी भी नहीं | फिर मन को झटका लगा की कहीं कोपरगाँव तो नहीं आ गया और मैं तेजी से उठ कर दरवाजे की तरफ भागा | और अचानक ही मेरी निगाह घड़ी पर पड़ी | आह, यह क्या हुआ, मनो मेरा बहुत कुछ पीछे छूट गया हो | घड़ी ६ बजा रही थी | कोपरगाँव २ घंटे पहले ही निकल चुका था | मैं अब पूरी तरह टूट चुका था, आँखों से दो बूँद आँसू के टपक पड़े | मेरे साई ने मेरा साथ छोड़ दिया था | कितना सोचा था का कोपरगाँव में साई को प्रणाम करूँगा पर मेरा साई ही मेरे साथ नहीं है तो किस से शिकायत करूँ | हरीजी ने भी नहीं

उठाया | मन में कोई उम्मीद नहीं बची थी | बंगलोर कल पहुंचना था पर मैं तो अभी से हार चुका था | मन कर रहा था की जी भर कर लड़ाई करूं बाबा से की क्यों धोखा दिया मुझे | मैंने कौन सा सोना चांदी मांगा था | मैं तो सिर्फ़ उनको ही मांग रहा था | अब रात कुछ भी मन नहीं किया और मैं बिना खाए ही सो गया |

अभी मैं मुश्किल से १ घंटा ही सोया हूँगा की किसी ने मुझे जगाने की कोशिश की | मैं अपनी आँखें मलते हुए धीरे धीरे से उठा | मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा | मुझे हरीजी जगा रहा थे | हरीजी ने मुझे जगाया और मुझे अपने साथ लेकर जाने लगे | पता नहीं क्या जादू था की मैं भी उनके साथ साथ चलने लगा | फिर गाड़ी एक स्टेशन पर रुक गयी | अब मैंने देखा की हरीजी के साथ रमन जी भी थे | हरीजी गाड़ी से नीचे स्टेशन पर उतर गए थे | और उन्होंने मुझे भी उतरने को बोला , मैं भी उतरने लगा की

अचानक से गया और मैं स्टेशन के बीच था और मुझे होने लगी थी ने मिलकर निकालने की तब तक मैं पेरो को खो दोनों पैर मेरे हो चुके थे | कर मैं जोर-



मेरा पैर फिसल गाड़ी और मैं फस गया भयंकर पीडा तब सब लोगो मुझे वहां से कोशिश की पर अपने दोनों चुका था | मेरे शरीर से अगल यह सब देख जोर से रोने

लगा तब मैंने हरीजी तरफ़ देखा वो बिल्कुल बाबा जैसे लग रहे थे | मैं उनको अपलक देखता रहा गया, वो बाबा ही थे | तब वो मेरे पास आए और बोलो इतनी देर मैं पहचाना तुमने मुझे | देखो मैं तुम्हारी एक पुकार पर भागा चला आया और तुम मुझे ही दोषी ठहरा रहे हो | तुम मुझे दान के रूप मन कुछ देना चाहते थे देखो मैं ने तुमसे १० रुपये ले लिए | मैं हर पल तुम्हारे साथ था पर तुम्हारा समर्पण पूर्ण नहीं था | अब एक राज़ की बात सुनो | यह तुमरे कर्मो का प्रभाव ही है की जो तुम इतना कष्ट देख रहे हो | पर मेरे रहते मेरे भक्तो को क्यों कष्ट सहना पड़े | मेरे यहाँ रहने से तुम्हारे कर्मो का प्रभाव मंद पर गया | विधि के विधान के अनुसार फिर बाबा ने मुझे अपनी गोद में उठाया और गाड़ी के अंदर मुझे लेकर आ गये | फिर धीरे से मुझे मेरी सीट पर लिटा दिया | मेरे सर पर हाथ फेरते हुए बोले इस फ़कीर

पर तुमरा पूर्ण समर्पण होना चाहिए । मैं हर पल तुम्हारे साथ हे था । बाबा की बात सुनकर मेरी आँखों से आँसू बहने लगे । बाबा ने मेरी आँखों पर हाथ फेरा और बोले चलो अब मुझे जाना है और फिर बाबा ने सीने पैर हाथ रहा और मुझे हिलाने लगे ।

फिर अचानक से मेरी आँके खुल गयी । मैं ने देखा की सुबहे के नौ बज रहे थे और एक ब्यक्ति मुझे उठा रहे थे सायद उनको सीट चाहिए थी । फिर पूरा का पूरा सपना मेरी आँखों में घूम गया । बहुत अफसोस हुआ की कु नही पहचान्हा अपने साईं राम को ।

सबसे पहले मेरी नज़र मेरे पेरो पर पड़ी मेरे दोनों पैर सही सलामत थे बस तोडी से चोट लगी थी । मैं पुनः सपने पर विचार करने लगा । बाबा ने मेरी हर प्रार्थना का मान रखा । बाबा मेरे साथ आए । पर मैं हे न पहचान सका । मेरे पुराने कर्मों जी कारन सायद आज मेरे दोनों पैर नही होते अगर बाबा का साथ नही होता तो । बाबा के मेरे साथ आने से मेरे कर्मों का प्रव्हाव कम पड़ गया और मेरे दोनों पर बच गए पैर फिर भी मैं बाबा को हे दोष दे रह था । बाबा ने मेरी एक और प्रार्थना का मान रखा । मैंने प्रार्थना की थी की मैं बाबा को दक्षिणा देना चाहता था और बाबा ने १० रुपये के रूप में ले ली । जब मैं स्टेशन पैर गिरा था मैं सीधा बाबा के चरणों में था , यह उस प्रार्थना का मान था जो मैं ने बाबा से की थी की कोपेर्गों की दूल अपने सर पे लगआँगा । बाबा ने हेर कदम पैर मेरा साथ दिया , हेर प्रार्थना का मान रखा फिर भी मैं हेर पल बाबा को दोष देता रहा । बाबा साईं मुझे छमा केरे । यह मेरे समर्पण में कमी थी ।

पूर्ण सरधा के साथ समर्पण करो और सबूरी रखो । हम सिर्फ अपने दुःख देखते है पैर यह समजने की कोशिश नही करते की सायद अगर बाबा का साथ नही होता यह दुःख कितने जायदा होते ।

ॐ साईं राम

How Each One of Us Knew Sai Baba

This is one of my most favourite topics in our Sai Baba Forum. This section has the very first experience / incident which made devotees know Sai Baba. Each month we will have one experience under this section. The experience will be published "As it is" without any changes so it may have some grammar and spelling mistakes. This way you should be able to feel the joy of true expression of divine experience.

This experience was posted by pam99999 on July 14, 2007

“

AUM SAI RAM

Wat a beautiful topic is this!!! I love telling ppl how we met Sai.

Long back b4 i was born when my mom was unmarried, she lived with her brother. Once her brother's wife had few friends visiting them. So mom handled d kitchen d whole day. rgt from tea to lunch & dinner... single handedly she worked hard d whole day. by evening she was damn tired & had immense bodyache. She was jus a teenager then who didnt do lot of household work. But dat day she really worked hard. planned for they then evening after movie that dinner. The movie was a new one called "Shirdi ke Saibaba".

They didnt hear abt it earlier. While watching d movie mom was curious dat a fakir who could cure ppl jus thru a mere glance must be powerful enough. She asked dat is it possible that her body ache gets cured while Baba saw her...



& lo... this thought crossed her mind & Baba looked at her from d big screen in d theatre. She felt as if sum one pulled out sumthing from her. within seconds she was in tears & ppl around were stunned dat how a girl who was so tired & was in pain few mins ago is so perfect now! yes it was Baba & the group shouted "Jai Sainath!!!"

This happened on a Sunday. next morning Mom's friend who visited from Jaipur gifted her an idol of sum God who she thought Mom knew. Coz dat idol was of sum saint who lived near Pune. He was SAI!!

Moms joy knew bounds when she Got Baba. She has preserved this idol till date. even after her mariage this is the only thing dat she carried with her. & yes she considers Shirdi her maika;) (mom's place) & how true. coz every time we go there we kinds r made feel so spcl by Baba...jus like perhaps d grandparents. Had they being alive they would have loved us d same. Baba is indeed our grandparent... our parent... our Sadguru... love u SAIBABA

btw did i tell u...

Mom had prayed to Sai for 2 daughters after her marriage...& then He sent us here.

Since then we have been aware of His grace. & more now coz i get to talk & read so much abt my Baba. i fel really closer to Him now. Thanx for this community Sainath.

Bless all!!

We all love u sooooo much:)

”

AUM SAI RAM

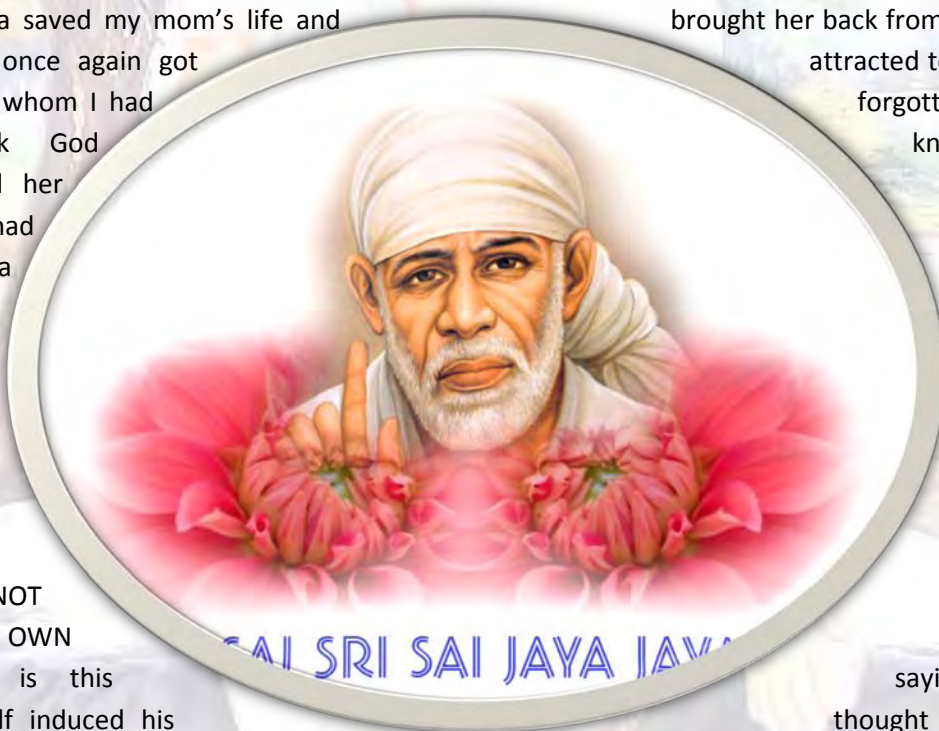
Here is another experience by Sai Ki Beti.

“

I remember I was in my teens and i believed a lot in Baba. I was devoted towards Baba I regularly used to visit Sai temples on Thursdays I also remember whenever I had any problem I used to cry in front of Baba and my problem wud be solved. But I do not remember as to what happened and I went far away from Baba I stopped going to his temples i stopped worshipping him. Last to Last year that was in 2006 I was going through a very bad phase I was suffering from severe depression and my mom was so worried I always felt like attempting suicide I was tired of living I never wanted to live I wanted to come out of this depression but in vain. One day my mummy was trying to condole me and she said me k hum log Shirdi jaayenge aur Baba sub theek ker denge. We went to Shirdi and again somewhat faith for Sai developed in me bus Somewhat not much Infact last year my mummy used to visit sai temple on Thursdays but i never accompanied her Infact I used to get irritated. This year in January i had been to Delhi for the mundan ceremony of my Masi's grandson. My Masi wanted me and my mom to stay back for some more time with her She was forcing us a lot to stay for some more days But I never wanted to stay back In fact My mom wanted to stay back some more days But I said No.It so happened the day before we were supposed to take our train. My mother got unwell and her BP had gone very high something 230 The next day before taking the train We took her to the doctor so that we cud take her medicine and then take the train But The doctors after doing all the examinations admitted my mom in the ICU as her heart had got enlarged and if it had been been half an hour late for us to see the Doctor

She wud have had a major heart failure. The Heart Specialist whom we visited was a Sai devotee He said k Sai ne inko bacha liya. We had to stay there for more 15 to 20 days During our this visit to Delhi I came across an miracle of Sai which happened with my Masi This year on 25th January there was ceremony of my Masi's grandson for what we had been to Delhi. It so happened that my Masi went to Noida Mandir of Sai in Sector 40 for giving the invitation card and a box of Laddu to Baba and take the blessings of Baba for the child. The Box contained 4 compartments with 4 big laddus in it The Pujari took the card and placed it at Baba's holy feets and he also kept the box at Baba's feets but he did not open the box Neither did he take any laddu from he just kept the box at the feets of Baba and returned the box to my Masi. After coming out of the temple My Masi opened the box of the Laddus and to her surprise one laddu was missing from one compartment and there were rose petals and Udi in that particular compartment in place of Laddu. Is this not a miracle Baba accepted the Prasad and also gave them the blessings in form of rose petals and Udi. After knowing about this miracle and also of thinking of how Baba saved my mom's life and brought her back from the clutches

of death I once again got attracted to my Baba to my Sai Pita whom I had forgotten some years back God knows Why ? Baba pulled her old devotee who had forgotten him like a string pulling the bird. As Baba says "I BRING MY MEN TO ME FROM LONG DISTANCES MANY THEY DO NOT THEIR OWN ACCORD"



How true is this saying of Baba. Baba himself induced his thought into me Aur main poori tarah se apne Sai pita ki ho gayi. and since then Baba is everything for me My father My friend My SaiMa everything everything everything . When i am upset I also fight with him Because I feel I have the right to fight with my father as every child do fight with their parents Today I am Staunch devotee of Sai But yes I am really sad as and how did I forget my Sai Pita and left him. But this is also true "Baba apne bhakto ko saat samundra paar se bhi kheech ker apne paas le aate hain" and Baba ne mere saath bhi waise he kiya Thankyou Sai Pita Thankyou for everything Thankyou very much k aapne aapko bhulane waali apni is beti ko wapass apne paas bula liya.

”

Thank you very much.

Faith

While I was doing engineering, I visited a church with one of my friends on a Sunday. The pastor was very friendly and spoke to almost everybody there personally at the end of the mass.

He gave a small but very effective discourse after reading something from Bible. I do not remember the verses which were read, but I remember the explanation. He told a story of a person whose only way to earn money was showing his talent of tight rope-walking at a very high altitude.

Beneath the rope would be a furious and overflowing river in a hilly region. However he would balance himself perfectly and go from one bank of the river to another and come back. One day after doing one round of his show, he returned the end of the river which had all the audience. He called upon the audience and asked for a volunteer who would accompany him during the tight rope walk. He said that he would carry on his back and nothing to fear. one turned up. It too risky and

Just then from one voice came who appeared than ten years he was ready to back. The artist child on his back from one end to returned back. people were



the person there was However no was simply dangerous.

the crowd, up. A child, no more old, said that climb on his carried the and walked another and All the speechless

and shocked. It was such a dangerous act and they could not stop praising the child for his courage.

One person from the crowd asked the child if he was afraid anytime. The child said, " No, why should I be? I climbed on the back of my father. That person is my father".

Just like that child, do you trust you're "FATHER" - SAI so much? Are you afraid of living in this world with all the turbulences and all the lurking dangers? Why should you be afraid when you are clinging to your "FATHER" always?

SAI's the biggest assurance in this every changing world. Let us climb on HIS back and never get down as long as we are on the tight-rope.

A Story of Goddess Vaishno Devi

Online: <http://forum.spiritualindia.org/story-t20669.0.html>

The story is about seven hundred years old. Two kilometers away from present Katra town, is a village named Hansali. This picturesque-place surrounded on all sides by trees and brooks, pre-sents an thrilling view of nature. In the midst of this atmosphere a sound was reverberating in the mountains of Trikuta....

"I don't know hymns; I don't know how to adore thee; I don't know formal worship; I don't know even your shape; Neither I know the method of meditation nor the postures of meditation story all my sins and help to I deserve."

"Victory to you,, Bhavani," said Dhar. His throat rolled down the drops appeared forehead; lips Dhar asked are the greatest knower of known Why don't you prayers? What comings in my goddess! Be Pardon my sins person that why adore my home? of progenitors without my Pan-dit Shri-Dhar



Oh mother Pandit Shri-choked, tears cheeks, sweat over his quivered. Shri-mother, "You of great. You are and unknown. accept' my are the short-wor-ship? Oh, benign unto me. or else tell me in children can't How can my line continue descendants?" was talking as if

to him with emo-tion and devotion. His whole body was shivering & suddenly a murmuring sound came beneath the fallen dry leaves.

"Chhan, Chhan, Chhan...".

Sound of Pazeb (Anklet) filled the air. Pandit ji looked in the direction of leaves and the rays of blazing sun fell on his face. The whole atmosphere looked blissful. Shri-Dhar was aghast. He saw here. & there, but couldn't find anyone. He took it as his own hallucination and offered the flowers of wor-ship and left for his village. He had to conduct girl worship ceremony.

The girl worship ceremony started. Six small girls were sitting in line with folded legs. Suddenly Panditji's eyes fell on a ravishing face, full of beauty and splendor. Panditji was amazed and bewitched. It seemed as if hundreds of suns were blazing on her face. It was so innocent, as if thousands of lotuses had blossomed. This girl had never been spotted in the village earlier. Her clothes were red in color and she was wearing an anklet.

The girl put her feet in the front of Pandit Shri-Dhar. He started to wash her feet. Then he worshipped all the seven girls flowers. Later he gave 'Dakshina' to them. All the divine shaped girl, about to ask her when the divine form of girl, said come to you for job." On hearing girl the devotee overwhelmed.

The girl said, "You in the vil-lage and are holding a of god." Before her any-thing, the Shri-Dhar was was that girl? She a divine girl. Then anxious about 'Bhandara', the wor-ship of god. he could invite would arrange other material required for it? He thought he could not conduct the feast (Bhandara). He thought that the mysterious girl may have been divine & wanted to examine his devotion. He resolved to in-voke people from the village and near-by places & left his home to invite all the people including 'Bhairav Nath'.



and served served food and (offering in cash) girls, except the left. Panditji was some questions, goddess, in the to him, "I have an important this from small was

convey to people around, that you feast in the name Panditji could ask girl disappeared. perplexed. Who should have been Shri-Dhar became holding of feast in the He thought that everyone but who the eatables and

Bhairav Nath enquired of Panditji, if he could fulfill the requirements of so big a congregation. He warned him of bad consequences in case of failure. He reminded him that once; Lord Indra was cursed by their guru for not being able to satisfy the appetite of guru and his disciples. He said to Panditji, "Our

guru ji can burn the whole village by his curse in anger. So you think before deciding to invite us. You are committing a great blunder by calling us on feast." Panditji folded hands and said, "Sir, you are a great sage, saint and seer. By good luck, I have been able to see you. I have already invited the people from far & nearby places. I have requested you to visit my home deeming it to be my duty. Although I know that I can't perform such a big holy feast (Bhandara) yet I have to perform it.

"Why?" enquired yogi; "Holy sage, that girl has ordered me to perform it," said Shri-Dhar. "Which girl"? Again the yogi enquired "Fantastic! a small girl will arrange holy feast for such a huge group of holy saints". The saint turned towards his guru & said, "Sir, listen the words of Panditji. He says that a small girl wants to feed all of us and also the whole village." Guru Gorakh Nath replied, "What harm is there to take the test? We should go and see ourselves, who this girl is?" The guru raised his hands and said to Shri-Dhar. "We accept your invitation. We will arrive tomorrow in time.

Shri-Dhar got dead-tired by visiting the houses of people in villages and fell asleep at night. In the morning, he got worried about the arrangements for 'Bhandara'. People started to pour in.

It was noon. Sun was blazing high in the sky. Shri-Dhar was sitting outside his hut on a raised earthen platform. He was lost in worry as nothing had been arranged. Meanwhile the sound of saint's arrival could be heard from a distance. Holy saint, Gorakh Nath, was proceeding towards the hut, accompanied by huge group of devotees.

The whole village hummed with activity and people thronged towards the hut. Some said that Panditji has got himself entrapped. Others thought that whole village will be put to disrepute, because of Panditji's folly. Even ladies began to murmur.

Suddenly, the sky was overcast with clouds and for a moment it was almost dark and later bright sun appeared again and darkness disappeared. Surprisingly a divine girl, wearing red apparel and a trident in hand, appeared in front of Shri-Dhar. Nobody could know, from where, the girl appeared.

The divine girl said, "Panditji, leave your worries. Everything will be arranged. You get up and ask the holy men to get into your hut and eat food." Shri-Dhar got up and requested the saints to grace his hut.

Guru Gorakh Nath said, "How can I sit in your hut with my three hundred and sixty disciples? For us, open space, outside the hut, will be suitable. Your hut is too small. Panditji, please arrange to serve the foods, outside the hut." Shri-Dhar replied, "Sir, the girl has invited you inside the hut." Guru ji proceeded to hut and his disciples followed him one by one. All the people got accommodated inside the hut and there was still some room left. People of the village sat outside. Bhandara started. The divine girl started to distribute food from mystic pot (Kamandal). Panditji became happy while others were surprised. Everyone got food of choice. Numberless foods of varied tastes were distributed and people ate to their heart full.

On seeing this, Gorakh Nath and Bhairav-Nath admitted in their conversation that the girl had some supernatural powers. They decided to probe about her antecedents. The girl reached near Bhairav Nath, serving food. He said to the girl, "You have served food to everybody as per their choice. Now serve me also food of my choice." The girl replied, "Your holiness, what do you want?" Mother knew everything. She wanted to play a sport with her child in the same way, as a mother .plays with a baby or as a baby plays with his toys. So in spite of knowing everything about Bhairav she wanted him to spell it out.

Bhairav said, "Bring for me meat and drinks (wine)." The girl replied, "Sir, please do not forget that you are sitting in a Brahmins hut and this au-spicious feast is vegetarian. So please ask only those foods which are vegetarian." Bhairav stood by his choice. He wanted to test the powers of this amazing girl. Discussions started over this issue and Bhairav lost temper. He tried to catch hold of the hand of girl. The

girl (goddess) also, was not an being. He went into meditation) and saw powers that the girl is Trikuta Mountains. He wanted to know the girl, her source of mystery surrounding restive and as such from his Guru, to know her abode. He wanted to know the and their source. allowed Bhairav to wished him good

Bhairav left for in medita-tion, the and followed her.



disappeared. Bhairav, ordinary human-samadhi (Intense by his spiritual moving towards His quest increased. the whereabouts of power and the her. He became sought per-mission follow the girl and to told him that he secret of her powers Guru Gorakh Nath pursue the girl and luck.

Trikuta hills. He saw, path taken by the girl

Meanwhile Pandit Shri-Dhar became restless just like a fish out of water. The divine girl had left the hut since last two days. He was continuously gazing towards the unknown. He stopped eating, drinking and talking. It seemed as if the jug of water had been snatched from the hands of a thirsty man. The day passed in this way and night set in. He fell asleep.

While sleeping Panditji felt, as if, someone is pressing his hand on his head. The soft touch of hand gave him relief and he opened his eyes. To his astonishment, he found Durga goddess riding a lion, adorned with ornaments, trident in her hand and many other-weapons gracing her dazzling and sparkling personality. Panditji reverently bowed down his head and sang hymns in the worship of mother. Mother enquired of Panditji, "Why did you stop eating and drinking? How can you worship with an empty belly?"

Come, I will show you my abode." Shri-Dhar followed mother with folded hands. It seemed, as if everything was moving mechanically. He started riding up the hill. Then they reached near a cave. They entered the cave. The mother showed him her abode in the cave. The devotee was jubilant on witnessing it. Tears rolled down his cheeks in reverence. He bowed down his head and worshipped the goddess mother. Then they came out of the cave. The moment he ejected-out of cave the bright light fell on his eyes and Shri-Dhar awoke from his sleep. It was dawn. The Sun had come out scattering red rays in streaks in the sky. Shri-Dhar got up from the bed.

Panditji was very happy. The scenes witnessed during dream were still fresh in his mind. The picture of mother astride a lion in full glory was causing a commotion to him. He remembered every bit of path, place, the goddess in 'Pindi' shape, the beautiful cave, the mountains falling on the way etc.

Nine months passed by. Bhairav Nath was loitering on the mountains in search of mystic girl. He sat in meditation several times and tried to know the whereabouts of the girl through mystic pursuits but he failed. Although he knew that the divine girl is hidden somewhere on the same mountain yet he could not locate her. The path, she followed, was not clear. Earlier, he had seen a 'Langur Veer' (monkey) with a red flag in hand with the girl. Then he saw the girl hitting a stone with an arrow and water gushed out of that stone. Bhairav reached near that place and again sat in meditation. He saw the girl standing at the mountain top. Bhairav went to that place and found the foot-print (marks) on the stone. Then he could not locate the girl for nine months. His innate desire for the search of girl, increased to the extent of madness.

One day his eyes fell on a hermit. Bhairav enquired of hermit, "Sir, have you seen any girl here?" The hermit replied, "Perhaps you are not aware, that goddess Maha Devi lives here. Who else can stay here?" Bhairav asked, "Where can the girl, whom I am searching, hide for nine months? Is it not possible that she is hidden in the cave?" Saying so, he started to enter a narrow cave beneath the hermit.

The hermit stopped Bhairav. He stood in front of the cave mouth and said, "Oh fool! The girl, whom you think as ordinary human being, is all powerful goddess 'Adi Kumari' * . It is good for you to return back."

It is said that when evil times are to befall on a man, his intellect fails. Bhairav Nath also acted in the same manner. The more he was forbidden by the saint, the more he became stubborn about entering the cave. He thought how a girl could remain hidden in cave for nine months. A cave cannot become a womb (Garb-Yoni). He vowed to enter the cave. Mother goddess was witnessing the mental agony and turbulence of Bhairav. In fact, it was her own sport (Lila). She could annihilate Bhairav in a spur of moment, but she wanted to continue the play a bit more.

On seeing Bhairav entering the cave, she tore open a path behind the cave by her trident and came out. The goddess went ahead, while Bhairav followed her. At last the goddess reached near the beautiful cave on Trikut Mountains. Goddess asked Bhairav to return back and stop following her, but Bhairav refused. So the goddess kept 'Veer-Langur' (monkey) as a guard on cave-mouth and entered in the cave. Bhairav also started to enter the cave. However Langur-Veer stopped him. He said to Bhairav,

"Mahamaya has forbid-den me from allowing anyone to enter into the cave. So please take leave." Bhairav got agitated and asked Langur, "Who are you to stop me? I am Bhairav-Bali. I can go to any place." On saying this Bhairav snatched 'Gada' (club) from Langur and started hitting him. The two fought battle royal for a long time, till Langur fell down. Bhairav threw him away and entered the cave. Goddess saw him entering and took the shape of fierce 'Chandi' god-dess and killed Bhairav by her sword.

Probably the play of goddess had come to an end. When a child plays with a toy and it doesn't move according to his choice, he may break it. He is the master of toy. In similar way, Maha Devi (a creation of her own sword of Maya). The goddess tore through the body of Bhairav so that the head on the peak. This place, in these days, is called as Bhairav-ghati.



Bhairav Nath ordinary

He was a spiritual saint. His head separated from the body, but the consciousness still remained. He felt sorry for his conduct. He repented and im-plored to goddess, "Oh! the mother of' creator, foundation of universe, I am

not sad for having lost my life, as my end has come at the hands of mother of creation. I will get 'Moksha' (Liberation). But mother, please pardon me. I was ignorant of your girl-form. Great mother, if you won't pardon me, then the whole world will consider me as a great sinner and abhor me.

On listening the prayers of Bhairav, the mother took pity on him. She gave him a boon and said, "After my worship, people will be worshipping you also. Your soul will be liberated. The devotees will visit your shrine after pilgrimage to my abode. The devotees, who pay obeisance to you, will also get their desires

fulfilled. As per this boon, the pil-grims of holy Mata Vaishno Devi shrine later visit the temple of Bhairav Baba. The place, where the Bhairav's head fell, houses a temple in the name of Bhairav.

Meanwhile, Shri-Dhar had become impatient after having holy 'darshan' of goddess mother in holy cave in a dream. He started to march towards Trikuta Mountains on the same path as he had witnessed in dream. Sometimes he used to forget the path but immediately a picture of the path would come in his eyes. In this way, he went on searching the cave and ultimately reached the cave mouth. He became joyous and entered the cave. There he saw mother goddess in 'Pindi- Rupa'. Shri-Dhar prayed holy mother with hymns and oblations. He worshipped mother with deep reverence. He made a daily routine of worshipping 'Pindis' and serves the mother in several ways. The unswerving faith and devotion of Shri-Dhar pleased the mother goddess and she appeared in front of her devotee and gave him a boon of four sons. The mother blessed Shri-Dhar and said, "Your future progeny will worship me for long times to come and they will be blessed with happiness, wealth, health and valour." Since that day, Shri-Dhar and his descendants have been worshipping the mother. After this event Shri-Dhar spread the message far and wide and the cave became popular amongst masses. People come in millions to visit the holy cave and get their desires fulfilled.

If you sow faith, you will reap miracles

Yesterday I had gone for darshan to Sai Baba temple here in malad - mumbai. Instead of the usual of having darshan and going back home I decided to spend some time alone in contemplation in the temple itself. As I sat and watched throngs of devotees come with prasad thalis, bowing down to baba , praying & then going back...i thought what if a miracle happened & shri sai baba would come back in the physical form again ? Just imagine....what a treat it would be.... Wouldn't you too like this miracle to happen in real.....yes, of course!!!! But then i thought, if shri saibaba would actually come back, how many of us would just leave all our work / meetings / everything in the middle & go all the way to have his darshan. I think nearly half of the world would do so, but tell me how many of us make it a point to visit / talk or even spend some quality time

With our parents / aged elders & not have the usual excuse - "too busy or too tired so not much time in hand!!! ". If baba gave spiritual discourses ... Wouldn't everyone listen with patience & obey whatever baba spoke, but again tell me how many of us listen / obey to whatever our parents / elders say and not just fret & fume regarding it as another lecture ? We all would love to cook for baba, make different types of sweets , feed him day in & day out, would do all types of seva ie, sweeping/mopping, cleaning his utensils , massage his tired legs etc etc just to see that baba does not have any sort of dis-comfort.

Now tell me how many of us would be willing to do the same for our parents / aged elders if so when required and not leaving them in the hands of full time maids. We would be bringing different types of expensive gifts/flowers etc for baba but how many times have you gifted anything to your parents / elders and not waited for an occasion to do so and that even without keeping the price tag in mind.

Bowing down and doing naman to shri sai and touching his feet for blessings....good !!! But also do the same to your parents / aged elders and seek their blessings as not only charity begins at home but blessing too should begin at home !!!

When you look into the eyes of saibaba dont you feel a sense of security and hope.... Well look into your parents eyes too...see their sorrows / troubles and see how they feel a sense of security and hope !!!

So, you readers of this thought of mine, think about it...and give the aged be it your parents / elders the sort of respect / time & love you would give to baba as Baba is yet alive in the form of your aged parents / elders.

Finally i end by asking forgiveness as i hope i have not hurt anybody's feelings but i do hope that i have aroused everybody's feelings towards their parents!

"If you sow faith, you will reap miracles"

The Story of a Donkey

URL: <http://forum.spiritualindia.org/philosophy-spirituality/story-of-the-day-t5397.0.html>

A washer man had 10 donkeys he used to take to the river with him to haul clothes on. While he was working or sleeping, he would tie them up so they wouldn't stray off. One day when he went to tie them up, he found he only had 9 ropes. He tied 9 donkeys and was holding the 10th by the ear wondering what he should do. A saint was passing by and asked him what he was doing. The washer man explained his dilemma and asked him for advice. The saint told him he only had to pretend he had a rope in his hands and performs the motions of tying the donkey up and that he would stay. So the washer man followed his advice and to his surprise, the donkey stayed all night while the washer man slept. In the morning when he was ready to leave the river, the washer man untied the donkeys and began his journey home. But the one donkey that had not really been tied refused to move.

The washer man was puzzled by this and was tugging on the donkey's ear to move him along. The donkey that had been tied with only an imaginary rope would not move. The saint reappeared again and the washer man sought his advice. The saint asked him if he had untied the donkey and the washer man said no and asked why he would need to since it was just an imaginary rope. The saint replied that donkeys are a lot like people in that they get caught up in an imaginary life and are under the illusion of bondage. So the washer man followed his directions and pretended to untie the donkey. The donkey then moved on along his way to the village with the others.

We create bondages for ourselves with our imagination.

The truth is that we are free. Untie yourself from the maya and free yourself from your mind.

The Banyan Deer

It is told about Gautama Buddha that he spent many lives in animal form, as various animals of the forest, before being born in human form as the prince, Siddhartha of the Sakhya clan. This story is about his life as King of the Deer.

Three kings come into our story. One is Brahmadata, a man, King of Benares, who had a "deer park" -- a large private hunting ground where roamed a thousand deer. The second is the future Buddha, king of the Banyan Deer and third the king of Branch Deer.

There were five deer and five in the preserve.

Brahmadatta used to forest with bow and frightening and all directions, in his Some fell while crippled, died of them life was made two deer kings got Banyan King (the "Friend, to avoid all life, let us make an day we shall draw your herd, one day whosoever's turn it is chopping block and head for the That way the King



hundred Banyan hundred Branch deer

ride through this arrow uplifted, scattering the deer in quest for deer meat. running away and, starvation; for all of miserable. Finally the together and the Bodhi-sattva) said, this fright and loss of arrangement. Every lots, one day from from mine, and will go to the lay down his or her executioner's axe. will have his meat."

King Brahmadata was getting old and hunting was now difficult for him, so he was satisfied. But he said that the two beautiful king deer were never to be killed (royalty recognizing royalty, you see).

One day it fell to the lot of a doe of the Branch Deer to lay her head on the block. She went to the Branch Deer King and said, "Lord, please put off my turn because I am going to have a little one. I am sure the lot is not meant to kill two at once. After the fawn is born I will take my turn."

But the Branch Deer King replied, "You know that I cannot pass your turn on to others, like that. Don't upset things. Go on your way."

Not getting any help from him, the doe went to the King of the Banyan Deer, bowed before him and told him her plight. He was moved with pity and compassion. He said he would take her turn. (It was the very nature of this great soul, who would one day become the Buddha, to give his own life to save that of another.) He then went to the chopping block and lay down with his head upon it. When the King's cook arrived and saw him he was astonished and ran to tell King Brahmadata what had happened.

The King came on his chariot followed by a crowd of people. "Friend," he said, "King Deer, did I not grant you that you would not be killed? Why then are you lying here?"

"Oh, Great King," said he, "a doe whose little one was just about to be born, came to me and said, 'Please change my turn to that of someone else.' Now it was impossible for me to deny such a pitiable request, so I have taken her turn."

At this, Brahmadata's heart melted. In his face and his voice it was seen that new feelings of compassion and remorse were coming over him. He commanded that there should be no more killing of the deer in his park. The influence of the Bodhi-sattva totally transformed his life.

To this day, the place is called the Deer Park, to remind us of how the deer were saved from the huntsmen.

Devotee's Experience

We have compiled a couple of experiences from Sai Devotees who posted them to Sai Baba Forum. You can read them online at - <http://forum.spiritualindia.org/your-experience-with-sai-baba/in-thurst-of-sai-leelas-t24841.0.html>. These experiences are provided as it is.

“

OM SAIRAM

As no one is posting baba's miracles/blessings, I will post one miracle from billions of miracles.

After completing my PG, I came across one problem. It was almost all impossible to solve that problem. Because no human being can solve that. I was very confident that baba is there to take care of me and my future. I came across so many ups and downs in this regard. But still I never lost faith in baba. But that happened what should happen. I burst in to tears, and I found no way, by not finding any response from baba you know, I went to church to get peace (some of my neighbours took me), but in vain. I did parayana of gurucharitra, sai leelamrutamu by sitting continuously till the completion of parayana.

One day I went to baba temple, and I decided to make 108 pradakshinas daily till my problem gets resolved. At the time of doing pradakshina, I was just asking baba with tears, "why this happened, if what I was expecting is not happened, then what will happen to me", I could see only baba's feet at the time of pradakshinas.

You know the seventh day from the day of pradakshinas I started, my problem got resolved, and I got blessings of my sai.

From then, whenever I feel depressed, I go to baba temple and do 108 pradakshinas by chanting baba save me, that's it... really he listens to every word of mine. and I return from the temple with bliss, and sooner my wishes are granted by baba.

some times I really ask baba, why he is so kind towards me, really I ask him with tears, I do nothing for him, but still he is fulfilling my each and every desire/wish.

OM SAIRAM

”

This is another experience posted by some devotee.

“

Sai baba's life had been full of miracles. One almost every day, every hour, and every moment.

There is a young businessman of Delhi called Anil. He had been an ardent devotee of Sri Sainath for the lost 15 years. In 1984, his one year old son was found to have a serious medical problem and had to be taken to London for treatment. The child suffered from Down Syndrome with chromosomic deficiency, a combination usually very fatal. The doctors advised surgery, though they were not fully hopeful of a cure. Anil had unimpeachable faith in Sainath, who had said " Why worry when I am there? " The child unfortunately expired on the operation table. Anil had been sure all along that the child would recover from the operation, so much so that he had even organised a birthday party for him on the fourth day from the day of operation.

The death of the child was doubly shocking to Anil. His only child had passed away. Worse still, his God had failed him. Before consigning the mortal remains of the child to flames, Anil took the pendent of Sri Sai from his neck and put it around the child's neck, praying the he should be given back him. Clearly, despite the severe loss and despite a sense of having been cheated, faith had not deserted him as yet.

Miraculously, Anil's wife conceived the same month. Wiser with the death of the child, the couple underwent an Embryonic Down's syndrome test. The first test was positive. The couple prayed continuously to Baba for his divine intervention. Once again everything seemed lost. They prayed to Baba fervently. The second test two days later indicated that the child was free from all cromosomic deficiencies. A healthy son was born to them in the ninth month. To every one's utter surprise, the newborn bore a mark of the size and same colour (blue) on his hip-line like the earlier child had. Anil had, in his faith, already announced that Baba would definitely give back his son. His faith in Sai is truly a matter of emulation.

JAI SREE SAI RAM!

”

काँच की बरनी और दो कप चाय

जीवन में जब सब कुछ एक साथ और जल्दी-जल्दी करने की इच्छा होती है, सब कुछ तेजी से पा लेने की इच्छा होती है, और हमें लगने लगता है कि दिन के चौबीस घंटे भी कम पड़ते हैं, उस समय ये बोध कथा, "काँच की बरनी और दो कप चाय" हमें याद आती है।

दर्शनशास्त्र के एक प्रोफेसर कक्षा में आये और उन्होंने छात्रों से कहा कि वे आज जीवन का एक महत्वपूर्ण पाठ पढाने वाले हैं...उन्होंने अपने साथ लाई एक काँच की बड़ी बरनी (जार) टेबल पर रखा और उसमें टेबल टेनिस की गेंदें डालने लगे और तब तक डालते रहे जब तक कि उसमें एक भी गेंद समाने की जगह नहीं बची... उन्होंने छात्रों से पूछा - क्या बरनी पूरी भर गई ? हाँ... आवाज आई...फिर प्रोफेसर साहब ने छोटे-छोटे कंकर उसमें भरने शुरू किये, धीरे-धीरे बरनी को हिलाया तो काफी सारे कंकर उसमें जहाँ जगह खाली थी, समा गये, फिर से प्रोफेसर साहब ने पूछा, क्या अब बरनी भर गई है, छात्रों ने एक बार फिर हाँ.. कहा अब प्रोफेसर साहब ने रेत की थैली से हौले-हौले उस बरनी में रेत डालना शुरू किया, वह रेत भी उस जार में जहाँ संभव था बैठ गई, अब छात्र अपनी नादानी पर हँसे... फिर प्रोफेसर साहब ने पूछा, क्यों अब तो यह बरनी पूरी भर गई ना ? हाँ.. अब तो पूरी भर गई है.. सभी ने एक स्वर में कहा..सर ने टेबल के नीचे से चाय के दो कप निकालकर उसमें की चाय जार में डाली, चाय भी रेत के बीच में स्थित थोड़ी सी जगह में सोख ली गई...प्रोफेसर साहब ने गंभीर आवाज में समझाना शुरू किया - इस काँच की बरनी को तुम लोग अपना जीवन समझो... टेबल टेनिस की गेंदें सबसे महत्वपूर्ण भाग अर्थात भगवान, परिवार, बच्चे, मित्र, स्वास्थ्य और शौक हैं, छोटे कंकर मतलब तुम्हारी नौकरी, कार, बड़ा मकान आदि हैं, और रेत का मतलब और भी छोटी-छोटी बेकार सी बातें, मनमुटाव, झगड़े हैं..अब यदि तुमने काँच की बरनी में सबसे

पहले रेत भरी होती तो टेबल टेनिस की गेंदों और कंकरों के लिये जगह ही नहीं बचती, या कंकर भर दिये होते तो गेंदें नहीं भर पाते, रेत जरूर आ सकती थी...ठीक यही बात जीवन पर लागू होती है...यदि तुम छोटी-छोटी बातों के पीछे पड़े रहोगे और अपनी ऊर्जा उसमें नष्ट करोगे तो तुम्हारे पास मुख्य बातों के लिये अधिक समय नहीं रहेगा... मन के सुख के लिये क्या जरूरी है ये तुम्हें तय करना है। अपने बच्चों के साथ खेलो, बगीचे में पानी डालो, सुबह पत्नी के साथ घूमने निकल जाओ, घर के बेकार सामान को बाहर निकाल फेंको, मेडिकल चेक-अप करवाओ..टेबल टेनिस गेंदों की फिक्र पहले करो, वही महत्वपूर्ण है... पहले तय करो कि क्या जरूरी है... बाकी सब तो रेत है..

छात्र बड़े ध्यान से सुन रहे थे.. अचानक एक ने पूछा, सर लेकिन आपने यह नहीं बताया कि "चाय के दो कप" क्या हैं ?प्रोफेसर मुस्कराये, बोले.. मैं सोच ही रहा था कि अभी तक ये सवाल किसी ने क्यों नहीं किया... इसका उत्तर यह है कि, जीवन हमें कितना ही परिपूर्ण और संतुष्ट लगे, लेकिन अपने खास मित्र के साथ दो कप चाय पीने की जगह हमेशा होनी चाहिये।

साईं शिवा

- अपूर्व

"ईश्वर आहे यानी ईश्वर है, यह कभी मत कहो कि ईश्वर नहीं है" -- श्री साईनाथ

सभी धर्म, सम्प्रदाय ईश्वर के वजूद को स्वीकारते हैं। सभी धर्मों में चाहे वह धर्मशास्त्र हो या फिर धर्मज्ञ जानियों के उपदेश, वह सभी हमको एक ही मंजिल पर पहुंचाने का कार्य करते हैं और वह मंजिल है ईश्वर। हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार इस सृष्टि में जो भी कुछ व्यास है वह ब्रह्म है, और यह जगत केवल उस ब्रह्म का प्रतिबिम्ब मात्र है। वही ब्रह्म ईश्वर है, जो सर्वव्यापी है, अनंत है, जिसका कोई ओर छोर नहीं, जीवित - अजीवित सभी में सिर्फ वही है। इस्लाम के अनुसार अल्लाह सब जगह पर है, इस दुनिया में कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ अल्लाह न हो, सारी दुनिया उसी मालिक के इशारे पर चलती है और वही सभी को सुख देने वाला है।

ईश्वर कहाँ है? कहाँ है अल्लाह? मन्दिर में या मस्जिद में? नहीं, वह सब जगह है। जब उसके इशारे पर चलने वाली हवा को भी एक स्थान पर नहीं बांधा जा सकता तो फिर उस परम सत्ता को किसी मन्दिर या मस्जिद में कैसे रख लें। वह हम सभी के हृदय में रहता है, वही है जो हमारा विश्वास है, हमारी सकरत्मकता है, हमारे हृदय में उठने वाला प्रेम भी वही है, किसी के प्रति दया भाव: भी वही है और विपत्तियों से हमारी रक्षा करने वाला वही है। ज़रा श्री भगवान् के विग्रह को देखिये, वे दयालु हैं, वे कृपालु हैं, करुणासागर हैं, कृपा-सिन्धु हैं, भक्त-वत्सल हैं और अपने भक्त की पुकार पर दौड़े चले आते हैं।

हमारे धार्मिक ग्रंथों का अवलोकन करें तो उनके अनुसार ईश्वर में यह सब गुण होते हैं जैसे कीर्ति, श्री, वैराग्य, ज्ञान, ऐश्वर्य और उदारता। श्री साईनाथ में यह सभी गुण विद्यमान हैं। हालाँकि जब साईनाथ शिर्डी में पधारे थे, तब वह एकांत प्रेमी थे और लोगों से ज्यादा व्यवहार नहीं रखते थे, परन्तु उनका आकर्षण ही ऐसा दिव्य था कि लोग उनकी तरफ़ खिंचे चले आते थे। श्री साईनाथ ने सिर्फ़ भारतवर्ष के ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लोगों को अपनी तरफ़ खींच लिया, ऐसी थी उनकी कीर्ति और आज भी है। आज बाबा देह में नहीं है फिर भी संसार के हर कोने से लाखों भक्त हर साल शिर्डी पहुंचते हैं और उनका आर्शीवाद और उनकी कृपा प्राप्त करते हैं। समय के व्यतीत होने के साथ-साथ श्री साईनाथ की कीर्ति दिन प्रतिदिन अमरबेल की भांति बढ़ रही है। यह तो हुआ कीर्ति के संबन्ध में, यदि हम श्री की बात करें तो साईनाथ ही सभी सुखों के दाता हैं। कितनों को धन, कितनों को मान, कितनों को आरोग्य, कितनों को संतान और कितनों को जीवन दिया। साईनाथ एक विरले ही गुरु हैं जो भक्तों की अत्याधुनिक मनाकोमनाओं को ही नहीं बल्कि उनकी सांसारिक इच्छाओं को भी पूरा करते हैं। उनकी पद्धति ही अपने आप में निराली थी, बाबा स्वयं कहते थे कि, "लोग मेरे पास आते हैं सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिये, कोई पद मांगता है, कोई मान, कोई धन तो कोई आरोग्य या संतान। मैं उनको सब देता हूँ ताकि उनकी इच्छा पूर्ण होने पर वह वो मांगे जो मैं देना चाहता हूँ"।

बाबा संसार से पूर्ण रूप से विरक्त थे | किसी भी प्राणी या वस्तु का उनको कोई भी मोह नहीं था | शुरुआत के दिनों में जब भक्त ज्यादा संख्या में शिर्डी नहीं आते थे यह उन दिनों की बात है, यदि ग्राम का कोई व्यक्ति उनको दक्षिणा में दो पैसे दे देता था तो वो उसमे से एक पैसा वापस कर देते थे | बाद में जब भक्तों की संख्या बढ़ गई और उनको एक ही दिन में सैकड़ों रूपए दक्षिणा मिलने लगी | पर उनका वैराग्य तो देखिये, दक्षिणा में मिले हुये सारे धन को वो जरूरतमंदों में बाँट दिया करते थे | अपनी आँख सवेरे निर्धनता में खोलते थे और रात्रि को निर्धनता में ही बंद करते थे | दक्षिणा लेने का उद्देश्य भक्त को वैराग्य का पाठ पढाना ही था, क्योंकि बाबा कहते थे अत्याधुनिक उन्नति में कंचन(मुद्रा) का मोह बाधक होता है | बाबा कहा करते थे, "गरीबी अक्ल बादशाही, अमीरी से लाख सवाई, गरीबी का अल्लाह भाई" | यदि कभी कोई कोई भक्त स्वतः प्रेरणा से कोई मूल्यवान वस्तुएं बाबा को भेंट करने को ले भी आते थे तो बाबा उन पर क्रोधित होते थे | उन्होने नाना साहब चांदोरकर से कहा था, "मेरी संपत्ति यह कौपीन और टमरेल है, लोग व्यर्थ ही मूल्यवान पदार्थ ला

दुखी करते हैं" | वैराग्य की क्या दी जाये कि जो का पालन करने स्वयं श्री हरि है, भिक्षा मांगे के लोगो के द्वार पर करते थे | कैसे करें उनकी महिमा जो संपूर्ण सृष्टि के आश्रयदाता है, वही हुई, लगभग खंडर सी एक पुरानी मस्जिद में निवास करे |



कर मुझे
इस
उपमा
संसार
वाले है,
वही
लिये
जाया
गुणगान
का कि
एक टूटी

ज्ञान कुछ और नहीं बल्कि सिर्फ परब्रह्म और अपने जीवन के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करना है | श्री साईनाथ तो स्वयं ब्रह्मअवतार है, उनमे और ब्रह्म में कोई अन्तर नहीं |

*गुरु ब्रम्हा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा |
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै: श्री गुरुवे नमः ||*

इसलिये श्री साईनाथ के ज्ञान की विवेचना करने का सामर्थ्य किसी में नहीं है | यहाँ पर हम उनकी कुछ लीलाओं का वर्णन करेंगे जो कि ज्ञान संबध में हैं | बाबा ज्ञान को बाँटने में यकीं रखते थे, हर किसी के लिये जानते थे कि कब क्या

उचित है। किसी को उन्होंने ज्ञानेश्वरी, भावार्थ रामायण या फिर गीता आदि पढ़ने को कहा तो किसी को रामविजय। साईंचरित्र में देखें तो पता चलता है कि जब भक्त उनसे कुछ सवाल पूछते थे तो कभी तो वो जवाब देते थे और कभी भक्तों से किसी ग्रन्थ विशेष का कोई भाग पढ़ने को कह देते थे, इससे भक्तों को अपने प्रश्नों के संतोष जनक उत्तर प्राप्त हो जाते थे। केवल वर्तमान का ही नहीं, सभी के भूत और भविष्य का उनको पूर्ण रूप से ज्ञान था। सदगुरु होते ही ऐसे हैं, ज्ञान के भण्डार, पर अपने ज्ञान का उनको लेशमात्र भी गर्व नहीं होता है। बल्कि वो उस ज्ञान को अपने सब भक्तों में प्रसारित कर देना चाहते हैं ताकि उनके भक्तों का उद्धार हो सके। नानासाहब चांदोरकर को जिस प्रकार उन्होंने गीता के श्लोक का अर्थ समझाया, वह सिर्फ सदगुरु ही कर सकते हैं। अज्ञान का ज्ञान देने में सिर्फ सदगुरु ही समर्थ हैं। सदगुरु करुणासागर हैं, अत्यंत लोभी पुरुष जो कि ब्रह्मज्ञान पाने की आशा से आया था, बाबा ने उसको भी निराश नहीं किया। न सिर्फ उसको बल्कि वहां उपस्थित सभी जनों को उस ज्ञान वर्षा में सराबोर कर दिया। चाहे वह योग क्रियाओं में खंडयोग हो या फिर कमजोर चिंदियों से बंधे तख्ते पर सोना (यह एक विशेष प्रकार की सिद्धि होती है जिसमें शरीर को वजन हवा से भी हल्का किया जा सकता है), सभी ज्ञान सागर उनके भीतर समाये हुये थे। न जाने कितने ही भक्तों का उन्होंने उद्धार कर उनको उनके जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति करा दी। कबीरदास ने कितनी सुन्दरता से सदगुरु के ज्ञान और उनकी कृपा का वर्णन किया है:

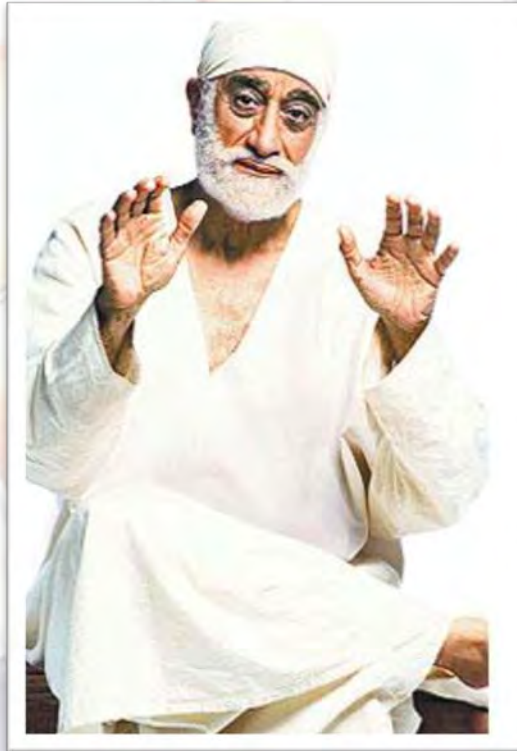
सदगुरु की महिमा अनंत, अनंत कियो उपकार।

अनंत लोचन उघाडिया, अनंत दिखावनहार।।

श्री साईनाथ का दरबार निराला होता है। क्या अमीर, क्या गरीब, क्या साहूकार, क्या भिखारी, क्या राजा, क्या रंक, सब के लिये उस दरबार में जगह थी। जैसा कि सदचरित्र में भी उल्लेखित है, बाबा के दरबार में भांति भांति के कलाकार भी आते थे। कोई नृत्य में, कोई गायन में, तो कोई भजन में प्रवीण होता था। दासगणु महाराज तथा कृष्ण जोगलेकर भीष्म जी को एक किर्त्तिकर के रूप में श्री साईनाथ ने ही स्थापित किया। हर रोज सैंकड़ो लोगों को भोजन कराया जाता था, कितनों को ही स्वयं बाबा के हाथों से मुद्रा दान भी प्राप्त होता था। और इन सब से ज्यादा महत्वपूर्ण, बाबा की संगति, भी लोगों को सहज ही प्राप्त होती थी। ज़रा इस दरबार का रंग तो देखिये, यहाँ आत्मज्ञान और मानसिक, शारीरिक सुखों के रत्नों की वर्षा हुआ करती थी। लोगों अनेको जगहों से आते थे और दरबार से आत्मानुभूति, मानसिक शान्ति और शारीरिक संतापों से मुक्ति पाते थे। क्या संसार का कोई और दरबार, परमेश्वर के दरबार की बराबरी कर सकता है? नहीं, द्वारिकामाई श्री साईनाथ का वही दरबार है। वही दरबार जहाँ सदगुरु की कृपा बरस रही है, बिना किसी भेद-भाव के, भिगो रही है सबको आनंद के सागर में, चाहे अमीर हो या गरीब, साहूकार हो या भिखारी, राजा हो या रंक। अपनी आंखें बंद करो और ज़रा कल्पना करो की अभी द्वारिकामाई के आँगन में हो, कितना आनंद महसूस होता है, होता है न, और जब हम वहां होते तब जो आनंद आता है, वह कहीं और नहीं आ सकता।

सदगुरु से ज्यादा उदार कोई हो ही नहीं सकता। वे अकारण की सब पर अपनी कृपा और दया की वर्षा करते हैं। चूँकि सागर को किसी पात्र में नापा नहीं जा सकता, इसलिये हम यहाँ पर कुछ ही दृष्टान्तों को उद्धृत करेंगे। अपने भक्तों के

कष्टो को खुद के ऊपर ले लेने की दया सदगुरु ही कर सकते हैं। चाहे वह किसी की प्लेग की बीमारी की गिल्टियाँ हो, या किसी भक्त की भूख प्यास। मनुष्य तो मनुष्य, जानवरों के लिये भी उनके हृदय में असीम प्रेम होता है। श्री साईं चरित्र से ही एक लीला उद्धत कर रहा हूँ। एक बार बाबा मस्जिद में बैठे हुये थे, लक्ष्मीबाई उनकी सेवा कर रही थी। तभी उन्होंने कहा, "अरी लक्ष्मी, मैं भूखा हूँ"। वे बोली कि बाबा थोड़ी देर ठहरो मैं अभी खाने को कुछ लाती हूँ। वह शीघ्रता से गई और कुछ रोटी सब्जी बना कर लायीं और बाबा को दी। बाबा ने वो रोटी एक कुत्ते को दाल दी। यह देख लक्ष्मीबाई कहने लगी कि बाबा मैं आपके कहने पर रोटी बना कर लायी पर आपने वह कुत्ते को दाल दी, यदि आपको भूख ही नहीं थी, तब अपने मुँहको व्यर्थ ही क्यों कष्ट दिया। बाबा बोले, "अरी लक्ष्मी, कुत्ते कि भूख और मेरी भूख में कोई अन्तर है क्या, उसकी भी तो अपनी आत्मा है"। एक अन्य अवसर पर लक्ष्मीबाई अपने निवास पर भोजन बना रही थी। उसी वक्त दरवाजे पर लगा। लक्ष्मीबाई उठ कर गई दी। संध्या समय जब वह उनसे कहा, "माँ, आज तुमने देखो मुझे अभी तक डकार आ प्रकार का अनुग्रह करना"। उनका विस्मय दूर करते हुये जिस कुत्ते को भोजन कराया था। इसी प्रकार अन्य सब इनी सब रूपों में डोल रहा हूँ। भोजन कराया करो। याद रखो भूखो को भोजन करता है वह करता है।



एक कुत्ता जोर जोर से भौकने और एक रोटी उस कुत्ते को दाल मस्जिद पहुँची तब बाबा ने मुँह भर पेट भोजन कराया है, रही है, मुँह पर सदा इसी लक्ष्मीबाई विस्मय में थी। साईनाथ ने कहा, "तुमने आज था वह यथार्थ मैं मेरा ही रूप प्राणी भी मेरा ही रूप हैं, मैं सदा इसी प्रकार भूखो को यह अकाट्य सत्य है कि जो वास्तव में मुँह ही भोजन

भक्तो के लिये साईं शिव ही है।

सगुणोपासना में हम सभी वास्तव में एक ही ब्रह्म को पूज रहे होते, पर सभी जन अपने अपने भावानुसार ईश्वर के विभिन्न रूपों को पूजते हैं, कोई शिवाराधना करता है, कोई विष्णु की, कोई शक्ति की, किसी को राम से लगाव है, किसी को श्याम से। विभिन्न लोगो को बाबा ने उनके इष्ट-देव के रूप में दर्शन दिये, किसी के लिये वह भगवान् पांडुरंग बन गये, किसी को राम बन कर कृतार्थ कर दिया तो किसी के महादेव बन गये।

प्रभु साईनाथ का अवतारी रूप देखें। उनकी वेश-भूषा अवधूतो वाली थी, न आभूषण, न अलंकारित वस्त्र, हाथ में सोटा या फिर भिक्षापात्र। वहीं महादेव को देखें, हाथ में कमंडल लिये, कैलाश की चोटियों पर मृगछाल पहने विराजित हैं। शंकर भोले हैं, पल में प्रसन्न हो जाते हैं और जब महादेव प्रसन्न हो, तो फिर सब आनंद ही आनंद है। महादेव अनादी

हालाँकि यह एक सत्य है कि

है, अनंत है, पूर्ण ज्ञानी है, वास्तव में सब जानो का सार वहीं हैं | स्वयं सारा संसार रचा कर खुद साधना में लीन रहते हैं, अपनी आत्म-निगमंता में ही सृष्टि का संचालन कर रहे हैं | सदगुरु श्री साईनाथ के बारे में श्री हेमाडपंत लिखते हैं, "बाबा पूर्ण ज्ञानी, मितभाषी और आत्म निगमन थे" | यदि सांसारिक गुणों की छटा देखना चाहें तो वह शिव का उमा विलाप है, जिसमें शिव उमा की देह को उठाये फिर रहे हैं, वही मेघा के दाह-संस्कार के पश्चात बाबा का रुदन है | दया का भाव: है, तो वह शिव का संसार की रक्षा करने के लिये स्वयं हलाहल पी जाना और बाबा का अपने भक्तों की बीमारी खुद पर ले लेना | भक्त-वत्सलता है महादेव की, बहेलिये द्वारा अनजाने में चढाये हुये बेलपत्रों से ही प्रसन्न हो जाना और वहीं साईनाथ का सभी पकवानों को छोड़ कर एक निर्धन, बुजुर्ग स्त्री की झूठी बची आधी रोटी खाना |

एक कथा याद आ रही है | किसी समय काशी में एक स्त्री थी, उसको कोई संतान नहीं थी, उसने संतान प्राप्ति के कई उपाय किये पर सब निष्फल रहे | उसी समय काशी में एक विद्वान् साधू का आगमन हुआ | उनका आम दरबार लगा करता था और लोग जा कर वहां अपनी परेशानियों का हल उनसे प्राप्त करते थे | वह स्त्री भी वहां गई और उसने महाराज से संतान प्राप्ति की प्रार्थना की | महाराज ने उसको बताया कि उसके प्रारब्ध में संतान सुख है ही नहीं, इसलिये तुम इस जन्म में तो कोई उम्मीद न रखो | वह दुखित मन से लौट आई | कुछ समय पश्चात् काशी में एक औघड़ का आगमन हुआ, शिव का परम भक्त था और शमशान में निवास करता था, न ही किसी से मिलता जुलता था, न ही किसी से कोई बात करता था | पता नहीं क्या सोच कर वह स्त्री एक रात्री उस औघड़ के पास पहुँची और संतान के लिये प्रार्थना करने लगी | औघड़ की समाधी भंग हो गई, उसने अपना चीमटा उठाया और चार बार उस स्त्री कि कमर पर मारा | बेचारी औरत रोती-कलपती वहां से भाग आई | समय के साथ उस स्त्री को एक एक करके चार संताने हुयीं | अब काशी के लोग महाराज के पास गये, बोले कि महाराज आपने कहा था कि इस औरत का प्रारब्ध में ही संतान नहीं है फिर यह चमत्कार कैसे हो गया | महाराज बोले, "यह सत्य है कि उसके प्रारब्ध में संतान नहीं थी, पर महादेव की इच्छा, महादेव वह भी दे सकते हैं जो प्रारब्ध में नहीं हो" | ऐसे न जाने कितने उद्धरण मिलते से साई-चरित्र से जहाँ पर बाबा ने अनेको निसंतानो को कृतार्थ कर दिया, चाहें वह दामू अन्ना हो, या श्री औरंगाबादकर या फिर श्री सपटनेकर | सभी स्थितियों में बाबा की लीला भी अलग ही रही है | दामू-अन्ना को जन्म कुंडली में पाप-ग्रह होने के कारण संतान सुख देखना सम्भव नहीं था, आम-लीला करी साई ने और दामू-अन्ना ने संतान सुख पाया | श्रीमती औरंगाबादकर जो लम्बी अवधी से नि-संतान थी, उनको नारियल के प्रसाद के द्वारा संतान प्रदान करी | श्री सपटनेकर को तो उनके वही संतान पुनः लौटा दी जो वह खो चुके थे | लिखने को बहुत कुछ है, पर वह कहते हैं न कि, "हरि अनंत, हरि कथा अनंता", अतएव अभी इतना ही, शेष किसी अन्य समय के लिये रखते हैं |

श्री साईनाथ हम सभी पर अपनी कृपा करें |

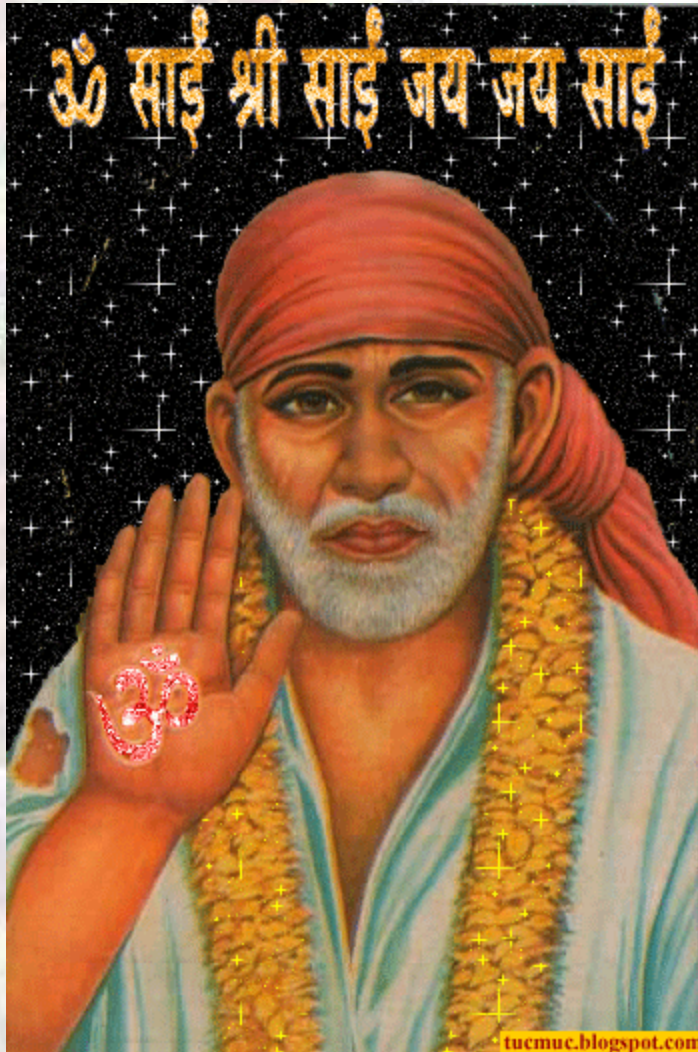
हर जगह है मेरे साईं

रोहित बहल

हर जगह है मेरे साईं,
चंदा की शीतल चाँदनी में, सूरज की सुनहरी किरणों में,
मगर हमें हमेशा रखना मेरे साईं, अपने पावन चरणों में ।

हर जगह है मेरे साईं,
बागों की खुशबू में, खिलते हुए हर फूल में,
मगर हमें हमेशा रखना मेरे साईं, अपने श्री चरणों की धूल में,

हर जगह है मेरे साईं,



चिन्तन, मनन और आस में,
संस्कारों और विश्वास में,
मगर हमें हमेशा रखना मेरे साईं, अपने प्राणों के
हर श्वास में.....

हर जगह है मेरे साईं,
झूमते हुए सागर में, बहती हुई नदियों में,
मगर हमें हमेशा रखना मेरे साईं, अपना बनाकर
आने वाली सदियों में

हर जगह है मेरे साईं,
श्रद्धा, सबुरी और सत् में,
किस्मत और मेहनत में,
मगर हमें हमेशा रखना मेरे साईं, अपनी कृपा की
रहमत में.....

हर जगह है मेरे साईं,
रात की अंधकार में और दिन के उजिआलो में,

मगर हमें हमेशा रखना मेरे साँई, अपने दो आँखियों के तारों में.....

हर जगह है मेरे साँई,
भक्ति और ज्ञान में, दान और ध्यान में,
मगर हमें हमेशा रखना मेरे साँई, सबसे ऊँचा अपने भक्तों के नाम में.....

हर जगह है मेरे साँई,
करम में, धर्म में और संतों के हर अभंग में,
मगर हमें हमेशा रखना मेरे साँई, अपने साथ इस जिंदगी के हर रंग में.....

हर जगह है मेरे साँई,
सच्चे दिल के भाव में,
पवित्र मन के लगाव में,
मगर हमें हमेशा रखना मेरे साँई, भवसागर तारते वक्त, अपनी ही नाव में.....

हर जगह है मेरे साँई,
इस सृष्टि के कण-कण में,
ना थमने वाले इस वक्त के हर क्षण में,
और आखिर में,
ये कविता मैं समर्पित करता हूँ मेरे बाबा आपके श्री चरणों में.....

कुछ शब्दों में पिरोयी माला बाबा के चरणों में

- अनु

वो आए रुके कुछ पल , झाका और चल दिए,
में दौड़ी पीछे पकड़ा हाथ,
और हैरानी से पूछा कहां चल दिए
वो बोले बड़े दुखी मन से ...अरे पगली
तुने की थी पुकार तो मैं दौड़ा चला आया,
पर लगा जब अंदर आने,
तो देखा मैंने कि भीड़ है लगी हुई
सभी ने है डेरा जमाया,
मैं बैठू कहां ये बता मुझको
क्या है तेरे मन में मेरा ठिकाना
तू जब पुकारें मुझे मैं दौड़ा चला आता हूँ
पर तू तो ये भी ना जाने कि है मुझे कहां बिठाना
इस भीड़ कि कुछ कम कर
कर साफ मेरी जगह को
फिर बुला मुझे फिर देख कभी ना होगा वापस जाना
मैं हो गई शर्मिदां इस सच को जान कर
कि मैंने की पुकार वो आ भी गए
पर कभी नहीं सोचा कि है उन्हें कहाँ बिठाना!!!!

हमारी मांगें पूरी करो

Sai Sevika

हाथ जोड कर शीश झुका कर, साईं तेरे दर पर आकर
बाबा करते हम अरदास, रखना श्री चरणों के पास

मागे हम आ हाथ पसारे, जो हम चाहे देना प्यारे
धन दौलत की नहीं है आस, न ही राज योग की प्यास

नहीं चाहिये महल चौबारे, नहीं चाहिये वैभव सारे
नहीं चाहिये यश और मान, ना देना कोई सम्मान

जो हम चाहें सुन लो दाता, देना होगा तुम्हें विधाता
खाली हम ना जायेंगे, जो मान्गा सो पायेंगे

हमको प्रभु प्रेम दो ऐसा, शामा को देते थे जैसा
हरदम रखो अपने साथ, मस्तक पर धर कर श्री हाथ

भक्ति हममे जगाओ वैसी, जगाई मेधा मे थी जैसी
भक्ति मे भूलें जग सारा, केवल तेरा रहे सहारा

महादान हमको दो ऐसा, लक्ष्मी शिन्दे को दिया था जैसा
अष्टान्ग योग नवधा भक्ति, साईं सब है तेरी शक्ति

सेवा का अवसर दो ऐसा, भागो जी को दिया था जैसा
चाहे कष्ट अनेक सहें, श्री चरणों का ध्यान रहे

निकटता दे दो हमको वैसी, म्हाल्सापति को दी थी जैसी
प्रभु बना लो अपना दास, हृदय में आ करो निवास

सम्वाद करो हमसे प्रभु ऐसे, तात्या से करते थे जैसे
सुख दुख तुमसे बांट सकें, रिश्ता तुम से गान्ठ सके

महाग्यान दो हमको ऐसा, नाना साहेब को दिया था जैसा
दूर अज्ञान अन्धेरा हो, जीवन में नया सवेरा हो

वाणी दे दो हमको वैसी, दासगणु को दी थी जैसी
घर घर तेरा गान करें, साईं तेरा ध्यान धरें

आशीश दे दो हमको ऐसा, हेमाडपंत को दिया था जैसा
कुछ हम भी तो कर जाएं, साईं स्तुति रच तर जाएं

महाप्रसाद हमको दो ऐसा, देते राधा माई को जैसा
हम भी पाएँ कृपा प्रसाद, शेष रहे ना कोई स्वाद

आधि व्याधि हर लो ऐसे, काका जी की हरी थी जैसे
शेष रहे ना कोई विकार, दुर्गुण, दुर्मन दुर्विचार

मुक्ति देना हमको वैसी, बालाराम को दी थी जैसी
श्री चरणों में डालें डेरा, जन्म मरण का छूटे फेरा

जो मांगा है नहीं असंभव, तुम चाहो तो कर दो संभव
विनती ना ठुकराओ तुम, बच्चों को अपनाओ तुम

माना दोश घनेरे हैं, बाबा फिर भी तेरे हैं
दो हमको मनचाहा दान, भक्तों का कर दो कल्याण

मेरे मन का साई

मिलकर करे एक अच्छा और नेक काम...जय साई राम ।

बाबा साई ने तो बहुत रास्ते दिखाए हैं हम सब को , पर हम सिर्फ मन्दिर में जाकर अपना फ़र्ज पूरा कर लेते हैं, आरती कर ली, नाम जाप किया, १० रुपये डाले आरती की थाली में और बस हो गया अपना काम । बोलो जय साई राम । हो गया अपना कर्तव्य पूरा । मन्दिर से बाहर आकर किसी भिखारी को २-४ रुपये दे दिए । क्या किसी भिखारी को २-४ रुपये देने से हो गयी हमारे अंदर के साई की आत्मा तृप्त ? क्या हमारे अंदर का साई पूरी तरह से खुश है हम से ? क्या वो आवाज़ नहीं देता है आपको ? क्या आपने कभी सुनी है साई की आवाज़ । मुझे पता है की एक साई हमारे अंदर भी तड़प रहा है और वो कुछ कहना चाहता है पर हम जानकर भी अनजान बन जाते हैं । हम अपना सर दर्द से लेकर अपने बच्चो, केरियर, शादी, प्यार, मोहब्बत तक सब कुछ उसको बोल देते हैं और एक वो है जो कुछ भी नहीं कह पता और अगर कभी कहता भी तो शायद हम सुन भी नहीं पाते हैं । बाबा ने तो पूरी दुनिया को सवारने का काम किया था और हमसे भी कहा की जाओ जो मैंने तुम्हारे साथ किया वो तुम दुनिया के साथ करो, यही मेरा संदेश है और यह ही मेरी सच्ची भक्ति है ।

हम सभी बहुत अच्छे हैं पता है क्यों? क्यों की साई हमारे अंदर जो है । हम अगर रोज़ एक अच्छा काम नहीं कर सकते तो कम से कम एक हफ्ते में तो कर ही सकते हैं? कोई भी छोटा सा अच्छा काम जो मेरे तुम्हारे अंदर के साई को बहुत खुश करदे । मुझे पता है की जब भी साई खुश होता है ना वो आपकी-मेरी आँखे भिगो देता है क्यों की वो आँसू साई की आँखो के होते हैं और वो भी खुशी के सच्चे आँसू ।

आओ हम सब मिलकर कुछ अच्छा काम करे, आओ मिलकर अपने अपने अंदर के साई को एक बार और खुश होने का मौका दे ।

यह तो साई का मन्दिर और मस्जिद है , जो कुछ भी आप यहाँ लिखते और पड़ते हो वो साई भी देखता और पड़ता है तो अब आप मुझे २ बातें बताओगे:

१. ऐसा क्या किया जाए की साई बहुत खुश हो?
२. आज आपने ऐसा कौन सा अच्छा काम किया की आज वो हमारे मन वाला साई बहुत खुश हो गया?

सभी भक्तो से निवेदन है की वो अपने विचार जरूर लिखे ।

About Us

www.shirdi-sai-baba.com is one of the most important, valueable and very popular website on Shirdi Sai Baba. It's been a long journey of 7 years since we started this website.

<http://forum.spiritualindia.org> is blessed online Sai Baba community with around 10,000 members. This is a very active Sai Baba Forum and it has around 7,00,000 page views per months with more than 2,00,000 posts from devotees across the world.

<http://sathyaibaba.spiritualindia.org/forum> is new and unique forum on Sathya Sai Baba.